Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 6.889, Volume 12, No. 03, July-September 2022, pp. 133-135

विद्यार्थियों की जीवन शैली एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

राजीव कुमार शर्मा*
डॉ. निर्मला राठौर**

प्रस्तावना

शिक्षा व्यवस्था किसी भी समाज के विकास की आधार षिला होती है। विद्यालय शिक्षा से उच्च शिक्षा तक यह व्यवस्था जैसी होगी समाज में नैतिकता तथा आचरण का प्रवाह भी उसी तरह परिलक्षित होगा। शिक्षा सीखने और सिखाने की औपचारिक–अनौपचारिक व्यवस्था है। मानव में सीखने की प्रक्रिया जन्म से मृत्यु पर्यन्त अनवरत चलती रहती है। उदाहरण स्वरूप– शिशु अपनी माँ तथा पालन–पोषण करने वाले अन्य व्यक्तियों के उन व्यवहारों, जिन्हें वह स्वयं देखता–सुनता है और इसके आधार पर बहुत कुछ सीखता है। इस प्रक्रिया में बालक, परिवार, आस–पड़ोस, समाज सभी का योगदान रहता है। खान–पान, गतिविधियों का चुनाव एवं व्यवहार जीवनशैली को प्रभावित करता है। सकारात्मक जीवनशैली व्यक्ति के अंदर प्रसन्नता का संचार कर सकती है वही नकारात्मक जीवनशैली व्यक्ति में दुःख, बीमारियों तथा तनाव को बढ़ा सकती है। जीवनशैली के आधार पर ही बालक अपनी आजीविका निर्धारण के विषय में सोचने लगता है। व्यक्ति की जैसी जीवनशैली होगी, जैसी आदतें होंगी उसी के अनूरूप उसकी व्यावसायिक रूचि होगी। वास्तव में व्यक्ति की व्यावसायिक रूचि मूलतः उसकी आदतों, जीवनषैली, शैक्षिक रूचि एवं उपलब्धि पर निर्भर करती है।

जीवनशैली

साधारण शब्दों में बालक क्या खाता है ? क्या पहनता है ? क्या खेलता है? किनके साथ रहता है ? कब, कितना व कैसे पढ़ता है ? उसकी क्या आदतें है ? उसकी पसंद–नापसंद क्या हैं एवं इनके प्रति उसके विचार क्या हैं ? ये सभी बातें बालक की जीवन शैली को दर्शाते हैं। बालक की जीवनशैली उसके विकास के साथ घनिष्ठ रूप से संबंधित होती है।

जीवनशैली, जीवनशैली शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग प्रसिद्ध ऑस्ट्रियन मनोविश्लेषणवादी मनोवैज्ञानिक अल्फ्रेड ऐडलर (1870–1937) द्वारा किया गया।

जीवनशैली एक जीवन जीने का तरीका है जो न केवल उस व्यक्ति को प्रभावित करती है जो इसे अपनाता है अपितु समाज को भी प्रभावित करती है। **एस. के बावा एवं एस. कॉर** के अनुसार जीवनशैली का तात्पर्य व्यक्ति के दृष्टिकोणों, मूल्यों तथा सामाजिक प्रस्थिति को प्रदर्शित करने से हैं इसके अतिरिक्त जीवनशैली के अंतर्गत सामाजिक संबंधों के प्रतिरूप, उपभोग, मनोरंजन तथा पहनावा भी सम्मिलित है। जीवनशैली से किसी व्यक्ति के विचार, आदतें तथा शिष्टाचार परिलक्षित होते हैं। जीवनशैली शब्द का प्रतिपादन करते हुए अल्फ्रेड एडलर(1929) ने कहा कि जीवनशैली का दृष्टिकोण मूल्यों को परिभाषित करता है और कुछ हद तक सामाजिक स्थिति को प्रदर्शित करता है। इसके अलावा इसमें मनोरंजन और ड्रेसिंग शैली है। यह व्यक्ति के विचारों को दर्शाती है। जीवनशैली का व्यक्ति की आदतों, शिष्टाचार व जीवन के तरीके से सीधा सम्बन्ध रहता है।

* शोधछात्र, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर, राजस्थान।
** प्रोफेसर, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर, राजस्थान।

व्यावसायिक रूचि

व्यावसायिक रूचि मूलतः शैक्षिक रूचि पर अप्रत्यक्ष रूप से निर्भर करती है। जिस बालक को जो शिक्षा पसन्द होगी, उसी के अनुरूप वह व्यसाय का चयन करेगा। यदि बालक की किसी व्यवसाय में अधिक रूचि है तो वह उसे कुशलता पूर्वक कर लेगा। क्योंकि रूचि में जिज्ञासा है और सुख की अनुभूति होती है।

व्यावसायिक शिक्षा के अर्थ से तात्पर्य है कि वह शिक्षा जो हमें जीविकोपार्जन हेतु व्यवसाय को चुनने उसे समझने और क्रियान्वित करने में सहायक हो वह व्यावसायिक शिक्षा है। जिस प्रकार किसी छात्र को इंजिनीयर बनना है तो उसे व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से ही इंजिनीयरीय शिक्षा का ज्ञान हो सकता है। रूचि एक आंतरिक प्रेरक शक्ति है जो हमें ध्यान देने के लिए किसी वस्तु, व्यक्ति या क्रिया के प्रति प्रेरित करती है। रूचि एक मानसिक संरचना है जिसके द्वारा व्यक्ति किसी वस्तु से अपना लगाव प्रकट करता है।

विश्वकोश–''व्यापक रूप में व्यावसायिक रूचियों के अन्तर्गत उन सभी प्रकार की रूचि को सम्मलित किया जा सकता है। जिसके द्वारा व्यक्ति को जीविकोपार्जन के लिए प्रशिक्षण प्राप्त होता है।

जोन्स (1970) ने व्यावसायिक रूचि के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है, ''व्यावसायिक रूचि का अर्थ समग्र रूप से व्यवसाय के प्रति रूचि से है। इसका अर्थ व्यवसाय के प्रत्येक कार्य में आनन्द प्राप्त करना है या वास्तविक रूप से उसको उस कार्य से संतोष मिलना है।''

किसी निश्चित व्यवसाय में व्यक्ति की रूचि होना व्यावसायिक रूचि कहलाती है। किसी विशेष व्यवसाय में रूचि एक सीमा तक, उस कार्य विशेष में व्यक्ति की सफलता को निर्धारित करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बालक का व्यवसाय–चयन उसकी व्यावसायिक रूचि पर ही आधारित होना चाहिए। व्यवसाय में सफलता के लिए आवश्यक है कि बालक का उस व्यवसाय में मन लगे, क्योंकि ऐसा होने पर ही वह पूरी निष्ठा और लगन से उससे सम्बन्धित कार्य कर सकेगा, आवश्यक कौशल और दक्षता हासिल करने के लिए समय दे सकेगा, परिश्रम कर सकेगा, उसमें कार्यकर सुख और संतोष का अनुभव कर सकेगा। इसलिए कहा जाता है कि बालक की रूचि उसके व्यवसाय चयन का आधार होना चाहिए।

यदि कोई व्यक्ति साधारण रूप से प्रसन्नतापूर्वक किसी कार्य को करता है तो उसमें आई परेशानियों का सहज रूप में ही सामना कर लेता है तथा कार्य के प्रति संतोष का अनुभव करता है। तो हम कह सकते हैं कि उसकी रूचि तत्सम्बन्धित व्यवसाय/कार्य में है। यद्यपि सामान्यतः बालक माध्यमिक स्तर तक पहुँचते–पहुँचते अपनी विभिन्न रूचियों में अन्तर स्पष्ट नहीं कर पाते व अपनी व्यावसायिक रूचि को भी स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं कर पाते हैं। स्ट्रांग व कूडर ने बालकों की व्यावसायिक रूचियों को जानने का प्रयास किया ताकि उनके बारे में विभिन्न सूचनाओं को प्राप्त कर उनकी रूचियों को वैध करार दिया जा सके।

समस्या की पृष्ठभूमि

वर्तमान युग में बालकों द्वारा शिक्षा लेते हुए व शिक्षा पूर्ण करने के बाद बेरोजगारी की लम्बी लाइन को कम करने, बालकों में जीवनशैली का विकास करने व बालक को स्वावलंबी बनाने में यह एक सार्थक प्रयास है। इसलिए शिक्षा जगत में इस शोध की प्रासंगिकता है जिससे बालक अपनी रूचि के अनुरूप व्यवसाय का चयन कर अपना जीवन यापन सफलता पूर्वक कर सकेगा। वर्तमान युग में देखें तो बहुत से लोग अब पढ़ने–लिखने के पश्चात बेरोजगार हो जाते हैं या पढ़ाई छोड़ देते हैं। ऐसी स्थिति में यदि बालक माध्यमिक स्तर पर अपनी रूचि के अनुसार विभिन्न व्यवसायों की जानकारी लेता है तो वह स्वयं बेरोजगारी को दूर कर सकेगा व समाज में अपनी प्रतिष्ठा व वर्चस्व को बनाने में सक्षम हो सकेगा। आज भारतीय समाज परिवर्तन के तीव्र दौर से गुजर रहा है। आज की युवा पीढ़ी डिग्री के पश्चात् हुनर के काम को उपेक्षित कर नौकरी को प्राथमिकता प्रदान कर रही है। आज की युवा पीढ़ी उनके रूचि पूर्ण व्यवसाय का चयन समुचित मार्गदर्शन के अभाव में नहीं कर पाती है। अतः प्रस्तुत शोध के आधार पर युवा पीढ़ी की जीवनशैली व व्यावसायिक रूचि को जानकर उसके लिए व्यवसाय चयन हेतु निर्देशित किया जा सकता है।

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की अवस्था उनके जीवन के निर्माण की अवस्था मानी जाती है। इस अवस्था में बालक जो भी सीखता है, प्रगति करता है वही उनकी आधारशिला होती है। इस अवस्था में छात्र–छात्राओं की जीवनशैली, व्यावसायिक रूचि भी अलग अलग होती है और उसका प्रभाव बालक की शैक्षिक उपलब्धि पर भी पड़ता है। शोधकर्त्ता ने यह विचार किया कि यह प्रभाव किस कारण और क्यों ड़ता है? यह जानने के लिए जीवनशैली एवं व्यावसायिक रूचि के विभिन्न क्षेत्रों का परीक्षण किये जाने की आवश्यकता महसूस की गई अतः कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों के भावी जीवन को दृष्टिगत रखते हुए विद्यार्थियों की जीवनशैली एवं व्यावसायिक रूचि की जानकारी आवश्यक है। जीवनशैली के कारण विद्यार्थियों के लिए विषय का चुनाव, व्यवसाय का चयन, शैक्षिक उपलब्धि हेतु उचित निर्देशन भी दिया जा सकता है।

आज का शैक्षिक जीवन केवल विषयों या पाठ्यक्रमों की पढ़ाई तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि इसमें अनेक पाठ्यसहगामी गतिविधियाँ भी जुड़ गई हैं जिन्हें भी शैक्षिक या अकादमिक जीवन का ही अंग माना जाता है, जैसे–कम्प्यूटर, फैशन डिजाइनिंग, खेल, तैराकी, आभूषण, सज्जा, आदि भी बालक की जीवनशैली को प्रदर्शित करते हैं। इसी प्रकार एक व्यक्ति जिस करियर या रोजगार के अवसर को प्राप्त करता है, वह उसकी जीवनशैली को प्रदर्शित करते हैं। जीवनशैली युवाओं की शैक्षिक उपलब्धि व व्यावसायिक रूचि को प्रभावित करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भटनागर, चांद तथा राय, पारसनाथ, (1977): "अनुसंधान परिचय", एल.एन. अग्रवाल पब्लिशर्स, आगरा।
2. पाठक, पी.डी, (2007) : "शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. पाण्डेय, आर.एस., (2007): "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
4. शर्मा, आर.ए., (2006) : शिक्षण तकनीकी", आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
5. शर्मा, आर. ए., (2009) : 'शिक्षा अनुसंधान', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
6. सक्सेना, एन.आर.एस. तथा अन्य, (2006) : "शिक्षा के दार्शनिक व समाजशास्त्रीय सिद्धान्त", आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
7. सिंह, गया, (2012) ''अधिगमकर्त्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया'' आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
8. त्यागी, जी.एस.डी. तथा पाठक, पी.डी., (2006) : "शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

♦❐♦